DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
B.A Part-I (Hon) Paper-II
Mo- 9415376545
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Lecture-05 Date..13/07/20..

श्री अरविन्दो का आध्यात्मिक राष्ट्रवाद संबंधी विचार

श्री अरविन्दो ने समय की आवश्यकताओं के अनुरूप राष्ट्रवाद को एक शुद्ध धर्म के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। यहूदी धर्म के नेताओं तथा शिक्षकों की भाँति अरविन्दो ने बंगालियों अथवा भारतीयों को 'चुनी हुई जाति' बताया और कहा कि उनका उद्देश्य भारत की राजनीतिक मुक्ति के ईश्वरीय आदर्श को प्राप्त करना है। किन्तु अरविन्दो की यह धारणा थी कि, भारत एक भौगोलिक प्रदेश नहीं, बल्कि माता है, वास्तव में भारत की ही उपज है। बंकिमचन्द्र-चटर्जी जिसे अरविन्दो ऋषि कहा करते थे, ने अपनी रचनाओं द्वारा इस धारणा को बहुत लोकप्रिय बनाया।

अरविन्दो के विचारों का राष्ट्रवाद वस्तुतः ऋग्वेद एवं उपनिषदों के उपदेशों पर आधारित है। वे सनातन धर्म को राष्ट्रवाद ही मानते हैं। उनका कहना था कि हिन्दू राष्ट्र सनातन धर्म के साथ उत्पन्न हुआ था और उसी के साथ वह चलायमान और विकसित है। जब सनातन धर्म का ह्रास होगा तभी हिन्दू राष्ट्र भी अवनति की ओर बढ़ेगा। यदि सनातन धर्म नहीं होता तो हिन्दू राष्ट्र भी जीवित नहीं रहता। राष्ट्र के रूप में भगवान अवतार होता है। राष्ट्र ~~के~~ अमर है। भारतीय भूमि में निवास करने ~~वाले~~ निवासी ईश्वर है। इसे धन, भू-भाग तथा जनसंख्या से नहीं नापा जा सकता। श्री अरविन्दो के शब्दों में- "राष्ट्र क्या है? हमारी मातृभूमि क्या है? वह भूखण्ड नहीं है, वाक्विलास नहीं है और न मन की कोरी कल्पना है। वह महाशक्ति है जो राष्ट्र का निर्माण करने वाली कोटि-कोटि जनता की सामूहिक शक्तियों का समाविष्ट रूप है।" अरविन्दो ने राष्ट्रवाद को एक धर्म बताया जो ईश्वर के पास से आया और जिसे लेकर हमें जीवित रहना है।

P.T.O

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
B.A Part-I (HON) Paper-II
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo-9415376545
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date..13/07/20.......

फ्रेडरिक हीगल के प्रभाव में अरविन्दो ने राष्ट्र की आत्मा का आदर्श प्रस्तुत करते हुए उसकी स्पन्दनशीलता एवं मानवीय आत्मा से उनका तादात्म्य स्थापित किया। राष्ट्रवाद को धार्मिक और आध्यात्मिक धरातल पर प्रतिष्ठित करते हुए अपने एक भाषण में श्री अरविन्दो ने कहा कि – " राष्ट्रीयता क्या है ? राष्ट्रीयता एक राजनीतिक कार्यक्रम है, राष्ट्रीयता एक सिद्धांत है जो ईश्वर प्रदत्त है, राष्ट्रीयता एक सिद्धांत है जिसके अनुसार हमें जीना है। राष्ट्रवादी बनने के लिए राष्ट्रीयता के इस धर्म को स्वीकार करते हुए हमें धार्मिक भावना का पूर्ण पालन करना होगा। हमें स्मरण रखना होगा कि हम निमित्त मात्र हैं, भगवान के साधन मात्र हैं।" अरविन्दो राष्ट्र तथा राज्य को पृथक्-पृथक् रखने में विश्वास करते थे। राष्ट्र को आध्यात्मिकता का अर्द्ध-पूर्णांक मानते थे जबकि राज्य को वे यन्त्रवत् ही स्वीकार करते थे।

श्री अरविन्दो ने दासता की बेड़ियों में जकड़ी तिरस्कृत भारत माँ को स्वाधीन करने की मांग की। उन्होंने कहा कि, मां को बेड़ियों से मुक्त करने के लिए हर संभव उपाय करना बेटों का कर्तव्य है। उनके शब्दों में – " भारतवासियों केवल भारत की आध्यात्मिकता, भारत की साधना, तपस्या, ज्ञान और शक्ति ही हमें स्वाधीन तथा महान बना सकती है। श्री अरविन्दो ने भारत को अपने आध्यात्मिक अतीत का ज्ञान कराना चाहा और उन्हें देखकर संतोष भी हुआ कि देशवासियों में अपने अतीत के के गौरव के प्रति आस्था जाग्रत होने लगी है। श्री अरविन्दो ने चेतावनी दी कि यदि हम अपना यूरोपीयकरण करेंगे तो हम अपनी आध्यात्मिक क्षमता, अपना बौद्धिक बल, अपनी राष्ट्रीय लचक और आत्मपुनरुद्धार की शक्ति को सदा के लिए खो बैठेंगे। राष्ट्रवाद को ईश्वरीय आदेश और प्रेरणा बताकर अरविन्दो ने राष्ट्रीय जीवन में एक नवीन चेतना भर दी। उन्होंने देशवासियों को कहा कि आत्मा में ही शाश्वत शक्ति का निवास है और उसे जगाने पर अर्थात आन्तरिक स्वराज्य प्राप्त कर लेने पर हमें सामाजिक दृढ़ता, बौद्धिक महत्ता, राजनीतिक स्वतंत्रता, विश्व पर प्रभावशालिता सब कुछ स्वतः ही प्राप्त हो जायेगा। तथा मानव जाति के आध्यात्मिक जागरण में भारत को अनिवार्य भूमिका निभानी है साथ ही साथ समस्त भूखण्ड को एक दिव्य सन्देश देना है।

Scanned with CamScanner